Dr. Vandana Suman, H.D.J.C, Ara

"Plato's Theory of Knowledge" (प्लेटो का ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त)

Philosophy CC-03

Greek and Medieval Philosophy

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में Plato का महत्वपूर्ण स्थान है। Plato का ज्ञान सिद्धान्त भी काफी महत्वपूर्ण विचार है। Plato के अन्य दार्शनिक विचार उनके ज्ञान सिद्धान्त पर ही आधारित हैं। उनके ज्ञान सिद्धान्त के दो पक्ष हैं: विधि पक्ष तथा निषेध पक्ष या मण्डन पक्ष और खण्डन पक्ष। अपने निषेधात्मक या खण्डन पक्ष के द्वारा Plato बतलाते हैं कि ज्ञान क्या नहीं है। इस पक्ष में इन्द्रिय जन्य ज्ञान का खण्डन है। विधेयात्मक या मण्डन पक्ष के द्वारा वे बतलाते हैं कि बौद्धिक ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। ज्ञान का निषेध पक्ष विधि पक्ष से अधिक महत्वपूर्ण है। 'ज्ञान क्या है' इसे जानने के पूर्व ज्ञान क्या नहीं है, जानना आवश्यक है। इस प्रकार Plato के ज्ञानशास्त्रीय विचार के दो पक्ष हैं:
(1) निषेधात्मक पक्ष (2) भावात्मक पक्ष

निषेधात्मक पक्ष के अन्तर्गत Plato ने ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त के रूप में वैसे सिद्धान्तों का खण्डन किया है जो उनके अनुसार यथार्थ नहीं है और भावात्मक पक्ष के अन्तर्गत इन्होंने ज्ञान सम्बन्धी अपना विचार प्रस्तुत किया है।

सर्वप्रथम Plato, Protagoras तथा Sophists के ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त का खण्डन करते हैं। इन लोगों ने दो ज्ञान शास्त्रीय सिद्धान्त को स्वीकार किया है —
1. प्रत्यक्षीकरण ही ज्ञान है (Knowledge is perception)
2. अभिमत ही ज्ञान है (Knowledge is opinion)

Plato एक-एक कर के इन दोनों सिद्धान्तों का खण्डन करते हैं। सर्वप्रथम इन्होंने Knowledge is perception के सिद्धान्त का खण्डन किया है। इसका सिद्धान्त

PRIORITY

के विरुद्ध उन्होंने अनेक आक्षेप उठाये हैं।

(1) अगर प्रत्यक्ष को ही ज्ञान मान लिया जाता तो ऐसी स्थिति में हमें स्वीकार करना होगा कि जिन व्यक्तियों को जो प्रतीत होता है लेकिन ज्ञान वही सत्य है लेकिन भविष्य के सम्बन्ध में इस प्रकार की बात करना ज्ञान से संगत नहीं है। और आवश्यक नहीं कि अगर किसी व्यक्ति को यह प्रतीत होता है कि भविष्य में वह किसी [illegible] योग का मतलब न्यायाधीश होना या रहना है तो [illegible] हो सकता है कि वह न्यायाधीश नहीं होकर किसी के अपने को किसी कारागार के अंधकार कोठरी में पाये। अर्थात भविष्य के सम्बन्ध में कोई भविष्यवाणी करना प्रत्यक्ष के आधार पर होता। सत्य होता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष को ज्ञान नहीं कहा जा सकता है।

(2) प्रत्यक्ष के द्वारा कभी-कभी हमें किसी पदार्थ का भ्रामात्मक ज्ञान मिलता है, जैसे पदार्थ नजदीक से देखने पर बड़ा प्रतीत होता है। और दूर से देखने पर छोटा प्रतीत होता है। एक ही साथ एक पदार्थ को बड़ा और छोटा कहना व्याघातक उक्तियों का प्रयोग करना है। अतः प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है।

(3.) अगर प्रत्यक्ष को ही ज्ञान मान लिया जाय तो सभी प्रकार के उपदेश, वाद-विवाद, तर्क प्रमाण इत्यादि असम्भव हो जाते हैं चूंकि प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्यय समान रूप से सत्य है। अतः एक बच्चा का प्रत्यक्ष भी उतना ही सत्य होगा जितना की एक वयस्क का। एक मूर्ख का भी प्रत्यय भी उतना ही सत्य होगा जितना की एक विद्वान का। इस प्रकार किसी भी वस्तु को प्रमाणित करने के लिए कोई आवश्यक नहीं होगी और सभी के सभी प्रमाण वाद-विवाद व्यर्थ

इत्यादि लेकर हो जायेगी।

(4) Protagoras ने मनुष्य को एक प्रत्यक्षवादी के रूप में मानकर सभी पदार्थों का मापदण्ड कहा है। (Homo mensura) अर्थात Man is the measure of all things. लेकिन यदि आधार ज्ञान किया जाय कि मनुष्य प्रत्यक्षवादी होने के कारण सभी पदार्थों का मापदण्ड है तो हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि एक साधारण पशु भी प्रत्यक्ष के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। अतः वह भी सभी पदार्थों का मापदण्ड है।

(5) प्रोटागोरस का यह सिद्धान्त कि प्रत्यक्ष ही ज्ञान है एक आत्म-विरोधी सिद्धान्त है क्योंकि अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि प्रोटागोरस का सिद्धान्त सत्य प्रतीत नहीं होता है तो स्वयं प्रोटागोरस के अनुसार उसे यह स्वीकार नहीं करना चाहिए क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जो सत्य प्रतीत होता है वही उसके लिए सत्य है।

(6) प्रत्यक्ष को ज्ञान मानकर सत्य की वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है। हम साधारणतः सत्य को वस्तुनिष्ठ मानते हैं लेकिन यदि चक्षु दोष के कारण कोई हरा पदार्थ किसी व्यक्ति को पीला प्रतीत होता है उस पदार्थ का पिला होना ही उसके लिए यथार्थ ज्ञान होगा जबकि वस्तुतः वह पदार्थ हरा है। इस प्रकार कोई भी वस्तुनिष्ठ सत्य नहीं रह पाता है, सभी के सभी सत्य आत्मनिष्ठ हो जाते हैं।

(7) प्रत्यक्ष को ज्ञान तभी कहा जा सकता है जब उसे स्वतन्त्र मानसिक प्रक्रिया मान लिया जाय। लेकिन हम

मानते हैं कि प्रत्यक्ष के आधार पर किसी पदार्थ के ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी न किसी मानसिक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। जो आदर्श तथा गणनात्मक ज्ञान हैं उनके प्रत्यक्ष नहीं है। इसका निष्कर्ष निकलता है। हमारे यह स्पष्ट होता है कि केवल ज्ञान इन्द्रियों का प्रयोग नहीं होने के कारण प्रत्यक्ष का वास्तविक ज्ञान नहीं कहा जा सकता है। इस प्रकार Plato ने विभिन्न तर्कों का प्रयोग करते हुए Knowledge is perception सिद्धान्त का खण्डन करने के बाद Plato ने Knowledge is opinion के सिद्धान्त का खण्डन किया है। कभी-कभी हम opinion के आधार पर किसी पदार्थ का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह ठीक है कि कभी-कभी opinion सत्य हो जाता है लेकिन इसके आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि opinion ही ज्ञान है। opinion दो प्रकार का होता है —

(1.) Wrong opinion or (2.) Right opinion.

Wrong opinion को निश्चित रूप से ज्ञान नहीं कहा जा सकता है लेकिन Right opinion को भी ज्ञान नहीं कहा जा सकता है। अगर कोई व्यक्ति कहे कि आगामी बुधवार को भूकम्प होगा और संयोग से भूकम्प हो जाय तो उस व्यक्ति का अभिमत सही निकल जाता है लेकिन इसके आधार पर यह कहना कि उस व्यक्ति को पहले से भूकम्प का ज्ञान था गलत होगा। कभी-कभी ऐसा होता है कि हम सहज रूप से किसी पदार्थ को सत्य मान बैठते लेकिन हमसे अगर यह पूछा जाय कि उसे सत्य मानने का हमारे पास तर्क क्या है तो हम तर्क

में अनुभव से जाते हैं। किसी भी ज्ञान को यथार्थ ज्ञान तभी कहा जा सकता है, जब हमारे पास उसी प्रमाणित करने का तर्क भी आलग्य हो। अभिमत (opinion) में इस प्रकार के तर्क का अभाव होता है। इसका आधार सहज विश्वास होता है। अतः अभिमत को ज्ञान नहीं कहा जा सकता है।

Plato के अनुसार ज्ञान का आधार बुद्धि है लेकिन अभिमत का आधार विश्वास है। अभिमत की उत्पत्ति संवेदना की बाह्य वस्तुता से होती है, जो किन्तु ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि (Reason) से होती है। अभिमत सत्य और असत्य दोनों हो सकते हैं। लेकिन ज्ञान हमेशा सत्य होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अभिमत को ज्ञान की संज्ञा नहीं दी जा सकती है।

शास्त्रीय सिद्धान्त के भावात्मक पक्ष में Plato ने अपने ज्ञान स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि यथार्थ ज्ञान किसे कहा जाता है। इसे स्पष्ट करने के लिए Plato ने बिना किसी परिवर्तन का अपने गुरु सुकरात के ज्ञान कथन को स्वीकार कर लिया है कि धारणात्मक ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। Knowledge is knowledge through concept) प्रश्न है कि धारणात्मक ज्ञान किसे कहा जाता है। धारणात्मक ज्ञान का अर्थ है किसी भी वर्ग के सार और सामान्य गुणों का ज्ञान प्राप्त करना। जैसे सुन्दर पदार्थों के सार और सामान्य गुण सौन्दर्य है मनुष्य का सार और सामान्य गुण मानवता है। अतः सौन्दर्य का ज्ञान और मानवता का ज्ञान धारणात्मक ज्ञान है और इसे ही

JANUARY

M T W T F S S
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31

FEBRUARY

M T W T F S S
1 2
3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28

Week 4th - 21st Day

TUESDAY 21 JANUARY

APPOINTMENTS PRIORITY ✓

परिभाषा भी कहा जाता है और Plato ने प्रत्यय कहकर पुकारा है। इस प्रकार Plato के अनुसार प्रत्यय का ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है क्योंकि इसके द्वारा ही किसी वर्ग के स्वभाव का ज्ञान मिल जाता है। इसमें एक प्रकार की वस्तुनिष्ठता पायी जाती है। ऐसा ज्ञान न तो प्रत्यक्ष पर आश्रित रहता है और न आगमन पर बल्कि इस प्रकार के ज्ञान का आधार बुद्धि है। अतः बौद्धिक ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। इस प्रकार Plato धारणात्मक ज्ञान को ही यथार्थ ज्ञान मानते हैं।

07.00
08.00
09.00
10.00
11.00
12.00
13.00
14.00
15.00
16.00
17.00